नीलकुरजिी संकटग्रस्त प्रजाति घोषति

स्रोत: द हिंदू

नीलकुरजिी (स्ट्रोबलिांथेस कुंथयिाना) प्रत्येक 12 वर्ष में एक बार खलिता है, इसे **IUCN रेड लसि्ट** में संवेदनशील (मानदंड A2c) के रूप में वर्गीकृत कयिा गया है।

- इस प्रजाति का इसके अद्वतिीय पुष्पन चक्र और पारस्थितिकी चुनौतियों के कारण पहले IUCN मानकों के अंतर्गत मूल्यांकन नहीं कयिा गया था।
- नीलकुरजिी तीन मीटर ऊँची एक **स्थानकि झाड़ी है, जो केवल दक्षणि-पश्चमि भारत** के पाँच पर्वतीय परदिृश्यों के उच्च ऊँचाई वाले **शोला ग्रासलैंड इकोसस्टिम (Shola Grassland Ecosystems)** में **1,340-2,600 मीटर की ऊँचाई** पर देखी जाती है।
  - नीलकुरजिी का वैज्ञानकि नाम **केरल के साइलेंट वैली नेशनल पार्क** (Silent Valley National Park) में स्थति कुंती नदी (Kunthi River) के नाम पर रखा गया है, जहाँ यह फूल बहुतायत में पाया जाता है।
  - वे सेमलपेरस (जीवनकाल में केवल एक बार प्रजनन करने वाले) होते हैं, तथा**जीवन चक्र के अंत में प्रत्येक 12 वर्ष में एक साथ खलिते और फलते** हैं।
  - अधकि मात्रा में खलिने के लयि प्रसदि्ध, ये फूल पहाड़ी घास के मैदानों को**बैंगनी-नीला रंग** प्रदान करते हैं, जसि कारण इन्हें **नीलकुरजिी (ब्लू स्ट्रोबलिांथेस) फूल के नाम** से जाना जाता है।
  - दक्षणि-पश्चमि भारत की उच्च ऊँचाई वाली पर्वत शृंखलाओं (High-Altitude Mountain Ranges) के 14 पारस्थितिकि क्षेत्रों में इस प्रजाति की 34 उप-प्रजतयिाँ का आवास है, इनमें से 33 उप-प्रजतयिाँ **पश्चमिी घाट** में और एक **पूर्वी घाट** (येरकॉड, शेवरॉय हल्सि) में पाई जाती हैं।
    - इस प्रजाति की अधकिांश उप-प्रजतयिाँ तमलिनाडु के **नीलगरिी** में हैं, इसके बाद मुन्नार, पलानी-कोडाईकनाल और अन्नामलाई पर्वत में हैं।
- **प्रमुख संकट**: प्रमुख संकटों में चाय और सॉफ्टवुड बागानों से आवास का नुकसान, शहरीकरण, आक्रामक प्रजातयिाँ और जलवायु परविर्तन शामलि हैं। इसके **लगभग 40% आवास नष्ट** हो चुके हैं।

//

और पढ़ें: नीलकुरजिी फूलों की नई कसि्म

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/neelakurinji-declared-as-a-threatened-species